मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • सलंग अंक १८५ • जनवरी-२०२३

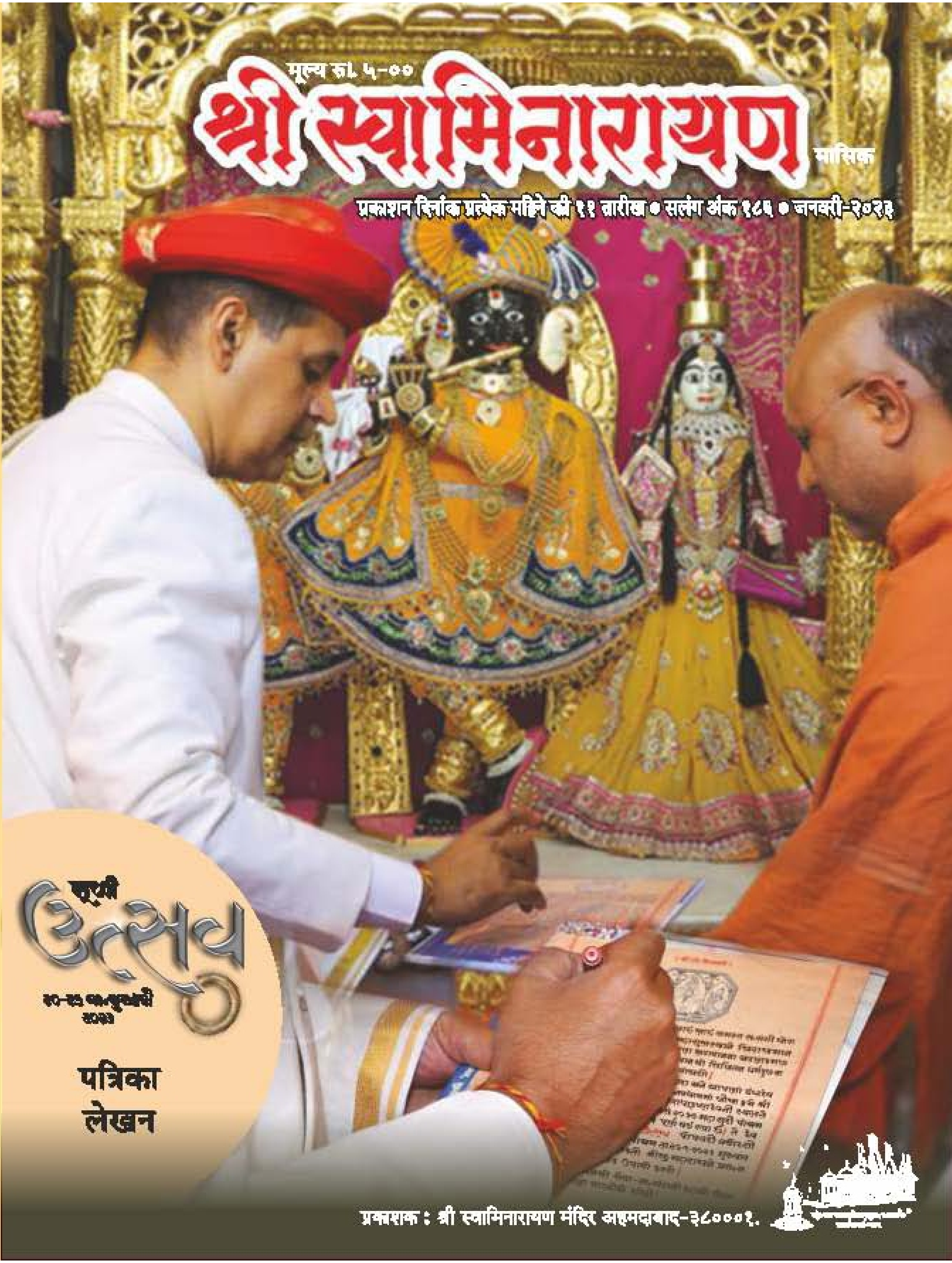

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

॥ श्री हरि विजयते ॥

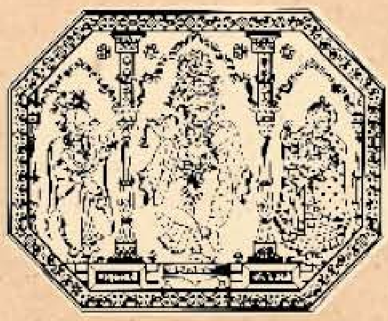

स्वस्ति श्री देश देशना त्यागी गृही आठे-आठ समस्त सत्संगी जोग
श्री नगर-अमदावाद महाशुभस्थाने बिराजमान
सप्तखंडना अधिष्ठाता श्री नरनारायण भगवानना चरणकमल
समीप श्री नरनारायणदेव देश पीठस्थान थी लिखितम धर्मकुळना
शुभाशिर्वाद सह परम स्वामिनारायण वांचशो।

अत्र कुशळमस्तु के अमारा तथा अने आपणा इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायणे संप्रदायमां नवधाममां प्रथम करेल श्री स्वामिनारायण मंदिर सुधी धाममां श्री राधाकृष्णदेवनी स्वहस्ते प्रतिष्ठा करी छे ते कल्याणकारी प्रसंगने वि.सं. २०७९ महा सुदी पांचम वसंत पंचमी गुरुवार ना दिवसे २०० वर्ष पूर्ण थई रह्या छे। ते देव दुर्लभ अवसरने संस्मारी राखवा **उत्सव** पोषवटी मनोरथी ता.२०-१-२०२३ शुक्रवारथी महा सुदी पांचम ता.२६-१-२०२३ गुरुवार पर्यन्त उजवाशे तेमां आपणी हरिभक्तो श्रीजी महाराजने प्रसन्न करवा सेवा अने सत्संगना अनेकानेक उपायो करशो।

तो आ **उत्सव**मां तन-मन-धनथी सेवा-सत्संगनो ल्हावो लेवा आप सौने हेते करीने निमंत्रण पाठवीए छीए।

आचार्य महाराजश्री साहेब — मोटा महाराजश्री साहेब — लालजी महाराजश्री साहेब

धर्मकुळ परिवार
श्री नरनारायणदेव देश पीठस्थान
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अमदावाद वती

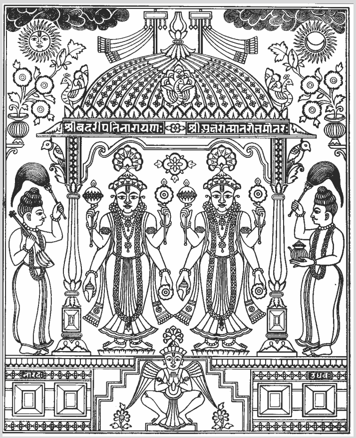

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८

श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

नारायणपुरा, अहमदाबाद.

फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स : २७४१९५९७

www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८

श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से

तंत्रीश्री

स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी

(महंत स्वामी)

मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,

अहमदाबाद-३८० ००१.

मो. ९३१३७०६०९५

magazine@swaminarayan.in

www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये

E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १६ ● अंक : १८६ ● जनवरी-२०२३

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृतवचन	०६
०४.	सोजा	१०
०५.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१४
०६.	भक्ति सुधा	१५
०७.	सत्संग समाचार	१७

अस्मदीयम्

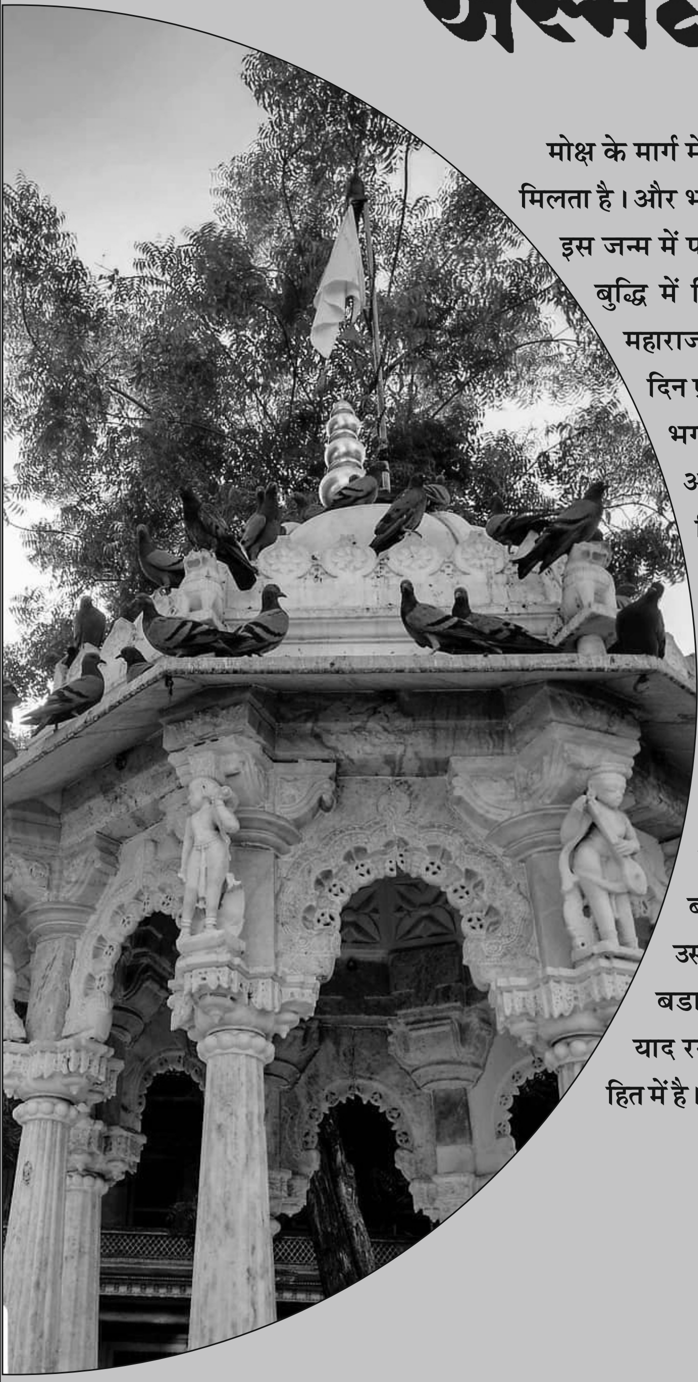

मोक्ष के मार्ग में सत्संग सर्वप्रथम सीढी है। सच्चा ज्ञान सत्पुरुष से मिलता है। और भगवान की भक्ति मे जुडा रहे। तो इस जीवात्मा को इस जन्म में परम मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसके लिये स्वयं की बुद्धि में विवेक का होना आवश्यक है। इस लिये श्रीजी महाराज कहते है कि – इस सत्संग मे जो विवेकी होती है। वह दिन प्रतिदिन अपने में निहित अवगुणो को देखता है। वह भगवान तथा भगवान के भक्त के गुण को देखता है। और साधु को कठिन बात भी कहता है। वह उसके लिये हितकारी मानता है। और दुखी नही होता है। तथा क्रमशः सत्संग के विषय में लगा रहता है। और जो अविवेकी होता है। जैसे जैसे सत्संग करता है। और बाते सुनता है। वह अपने गुणो को परखता है। वह संत-भगवान के दोष को दिखाकर उसके सामने कहता है। बात करने वाले का अवगुण लेता है। वह दिन प्रतिदिन कम होता जाता है। अपने विषय में गुण के सम्मान को छोडकर शूरवीर बनकर भगवान तथा संत के प्रति विश्वास रखकर उसका अविवेक समाप्त हो जाता है। तथा सत्संग की बडाई प्राप्त करता है। श्रीजी महाराज के इस वचन को याद रखकर संत समागम करे। भक्ति करे। यह जीव के हित में है।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की

रुपरेखा

(डिसम्बर-२०२२)

१ से ६ श्री स्वामिनारायण मंदिर कंपाला (आफ्रिका) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा में पधारना।

९ श्री स्वामिनारायण मंदिर माधापर (कच्छ) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा पर पधारना।

१० श्री स्वामिनारायण मंदिर कूजाड मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना।

११ श्री स्वामिनारायण मंदिर इसंड (ता. कलोल) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना।

१२ मूली मंदिर विजय स्तंभ स्थापन के अवसर पर पधारना।

१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर नागलपुर (कच्छ) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना।

२० श्री स्वामिनारायण मंदिर अमराईवाडी (अहमदाबाद) पर आगमन।

२१ श्री स्वामिनारायण मंदिर लवारपुर कथा के अवसर पर पधारना।

२२ श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा एकार्ध शताब्दी महोत्सव के अवसर पर पधारना।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(डिसेम्बर-२०२२)

४ श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा (पाटीदार) पाटोत्सव पर पधारना।

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर शाकोत्सव के अवसर पर पधारना।

९ श्री स्वामिनारायण मंदिर कोचरब (अहमदाबाद) शाकोत्सव के अवसर पर पधारना।

१२ मूली मंदिर विजय स्तंभ स्थापन के अवसर पर पधारना।

१८ श्री स्वामिनारायण मंदिर जामसर (हालार मूली प्रदेश) शाकोत्सव के अवसर पर पधारना।

२० श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा एकार्ध शताब्दी महोत्सव के अवसर पर आगमन।

२२ श्री स्वामिनारायण मंदिर लींबडी शाकोत्सव के अवसर पर पधारना।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुरव से अमृतवचन

लेखक : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)

अपने आश्रित सभी सत्संगीजन उन्हे अधिकार स्वरुप अपने धर्म के बारे में ध्यान रखे शिक्षापत्री श्लोक संख्या १२९ के आधार से श्रीहरि धर्मवंशी आचार्यश्री के आज्ञानुसार अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री स्थान, समय और धर्मकुल के आश्रित सभीजनो को सर्वजीव हितावह अमृत वचन से सत्संगी और धर्मप्रेमी जनताके जीवन को सुधारते रहते है । इस कारण से विशाल सभा में कई प्रकार के श्रोता गणो में से जो लोग अपने जीवन में आराध्य देव के प्रति दृढ भक्ति निष्ठा में जो दोष होता है । वह श्रीहरि के प्रताप से अपने सभी गुरु द्वारा ऐसे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से दूर होता है । तथा श्रीहरि एवम् धर्मकुल की कृपा प्राप्त करता है।

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर, हिंमतनगर प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर ता. १३-११-२०२२ : जब दर्शन कर रहे थे । तब भगवान सुंदर और साक्षात् तो लग ही रहे थे । लेकिन आनंद इस बात का है कि भगवान को यहाँ पर खुलापन प्राप्त हुआ है । हम सभी के आवास बडे बन गये है । इसलिये भगवान के घर का भी ध्यान रखना चाहिए। हम लोग प्रगति-उन्नति कर रहे है । इस में भगवान छूट जाये तो यह अच्छी बात नही है । क्योकि हम सभी भगवान की कृपा से ही योग्य बने है । इस मंदिर को ध्यान में रखे तो किसी बात का घटना नही बनेगा। आठ साल की लम्बी तपश्या के बाद यह भगवान आप को मिले है । यह सुंदर और कृपालु है । इन अवश्य ध्यान दे । नाशवान जीव की स्वाभिमान काम नही जाती है । जो शाश्वत है उसकी खुमारी अंत तक स्थायी रहती है । रुपया आता है । कल समाप्त हो जाती है । किसी का सट्टा लग जाये तोभी उसकी कोई जिम्मेदारी ही लेता है । भगवान सनातन है । इस कारण भगवान की स्वाभिमान और बल जितना रहेगा । उतना हृदय में बल आयेगा ।

ब्रह्मानंद स्वामी, मुक्तानंद स्वामी आदि नंद संतोने नरनारायणदेव के कीर्तन बनाये है । कई लोगो को ज्ञात भी नही है । ब्रह्मानंद स्वामीने नरनारायणदेव के वीरता के एक भजन लिखे है । उसकी एक पंक्ति हमे अधिक अच्छी लगती है । दूसरी पंक्तियो को हटा नही रहा हूँ । लेकिनजो पंक्ति मुझे याद है । उस के ये शब्द है । जे जे भजन विरोधी अंतर, ताके मूल उखाडो रे..... जो कोई नडतर होय तो येना मूलिया ज उखाडी नाखो..... ब्रह्मानंद स्वामी लिखे है । मैं नही लिखा हूँ । मैं तो इससे अधिक लिखता । इन नंद संतो का स्वाभिमान तो देखो । मैं कोई बार कहता हूँ कि ये नंद संत नही लिखे है । बरन लिख गया है । क्योकि लिखने में बल लगता है । भगवान का दर्शन होता हो, महिमा का ज्ञान हो तो स्वत लिख जाता है। इसका साक्षात् उदाहरण जानते है। महाराजने ब्रह्मानंद स्वामी को आवाज दिये । तब स्वामीजी बोले कि मैं सो नही रहा हूँ । आपकी भजन लिख रहा हूं । महाराज के पूछने पर तुरंत भजन बोलाये । आगे लिखते है कि विरोधी अंतर पछी जो क्या तकलीफ आवे तो, तो तन टूका करी डालो रे.... अब यहाँ पर ब्रह्मानदं स्वामी कही लडने नही गये थे । लेकिन भगवान का पक्ष, भगवान की निष्ठा और भगवान के स्वाभिमान

की बात है । भगवान की शक्ति ग्रहण करके जो होगा । यह अच्छा ही होगा । यह वास्तविकता है ।

हमारे पास आशीर्वाद लेने आये तो हम आप के लिये भगवान के पास प्रार्थना करेगे । और प्रार्थना करते भी है । क्योकि ये अपना परिवार है । परिवार सुखी हो । सम्पन्न बने । विकास करे । विशेष करके बच्चे बच्चियो में सिद्धान्त बना रहे । यही प्रार्थना करना है । शेष क्या माँगना ? रुपया माँगे ? नही माँगना है । आश्रितो के लिये अन्न वस्त्र की जिम्मेदारी तो महाराज ने ली ही है । भगवान का दर्शन करे तब संकल्प बिना दर्शन करे । यही सच्चा दर्शन होता है। दर्शन करते समय संकल्प न ले । आप को देखते है तो संकल्प आता है । आप सभी का भगवान शुभ करें । मैं देखकर आया हूँ । पीछे भोजन बन रहा है । फिर भी आप लोग प्रेम पूर्वक यहाँ पर बैठे है । कुछ लोग तो रसोई में धुमकर आ गये होगे । कोई बात नही । भूखे पेट भजन नही होय गोपाला । भगवान के मिलने का सुख महाराजने अधिक कहा है । इसका अंत नही है । महाराज के शब्दो में जो शुकमुनि ने पत्र लिखा है । तो उसमें से दस पत्र पढाये तो आप को ज्ञात होगा कि उसमें क्या बम वर्षा हुई है । ऐसे तो हजारो पत्र है । सीधे जजमेन्ट का निर्देश है । सीधे यह करे या सीधे यहाँ से जाये । यह पत्र देव के लिये है । आज यहाँ पर राजस्थान, धरियावद अगल-बगल के गाँव के, साँबरकांठा, बिलिया, वाली तथा बगल के ३८ गाँव के लोग एकत्र होकर बैठे है । अब आप सोचे । हमको आप को क्या चाहिए ? सूतक लगा है ? लेकिन बाप एक है । इस लिये बैठे है ।

अभी हमारे पास एक लडका पूजा लेने आया । पूजा किसकी करेगा ? हमारे बाप की करेगा । आप का पडोसी आप के घर के अंदर आप के पिता की फोटो रखे तो आप को अच्छा लगेगा की नही ? आज वह पूजा ले गया है । रात्रि में सोचकर आयोजन करेगा । प्रातः उठ जायेगा । पूजा का चदर लगाकर महाराज की व्यवस्थित पूजा करेगा । पहले बार की बात अलग होती है । बाद में क्या होगा? इसमें भाव की कमी आ जाती है । मैने मूर्ति को उलटा भी देखा है । इससे आप समझ जाये। सबकी बात मैं नही कर रहा हूं । अर्थात् पूजा की मशीन की तरह आदत नही रखे । भगवान के प्रति प्रत्यक्ष का भाव रखे । और भगवान प्रत्यक्ष ही है ।

अब भगवान के यहाँ जो खुलापन है । उसी तरह एक जगह पर हनुमानजी दादा की प्रतिष्ठा करे । हनुमानजी हमेशा दादा भगवान की सेवा में हमेशा रहे है । उसमें भेद करने वाले हम कौन है ? अपने सक्षम कितने है ? भगवान के फुट के सामने किसी का फुट नही आ सकता है । तो अपने फुट की माप तो १२ ईंच ही है । जिससे सेवा हो सके । वह भगवान को साथ रखे । और व्यवस्था भी रखे । आपके पूर्वजो ने इतनी सेवा किये है । मंत्र जाप किये है । यह याद रखे । कुछ लोग भगवान और माताजी के मध्य भेद रखते है । बीच में भाटिया बनाये है । हमें कुछ समस्या नहीं है । दरार हम बना कर रखे है । माताजी का स्वरुप लक्ष्मी जी का हो या पार्वतीजी का, सात्विक स्वरुप में क्या समस्या है । भगवान शिक्षापत्री में पूजा तथा सम्मान करने के लिये लिखे है । शास्त्रो में भेद कहा पर लिखाग या है । पाटिया कही पर भी है । मकान में चूल्हा अलग होता हो तो भगावन और महात्मा असहाय है । उस भगवान को हम मानने के लिये तैयार नही है । यह बात नाभि से मानता हूँ । भाई-भाई के मध्य झगडा कराये वह भगवान सच्चे होगे ? भगवान तो एक करते है । मनुष्य के बीच अंतर कम करते है । उसे भगवान कहते है । मछियाव के बुआ की बात याद है ? स्वामिनारायण भगवान बोले, सासु-बहु एक हो जाओ । अलग मत हों । बुआ नही मानी परिणाम क्या मिला ? बुआ का नाम-गाँव वचनामृत से डिलिट हो गया । अर्थात् निकल गया । कल्पना तो करे । जो एक बनाये वह भगावन है । हम भगवान से चालाक (ज्ञानी) है क्या ? २१२ श्लोक का अधिक वर्णन हो गया । अधिक नही जाये । इतना हो सके तो अच्छा है । अधिक जोडने पर बात बढ जायेगी । बलवान ही युवक होता है । कंगाल कठोर हो जाता है ।

ऐसा नही, वैसा नही, पहले की तरह नही ऐसे कंगाल रहना है तो कबर तैयार है । भगावन जैसे भगवान मिलने के कारण प्रबलता रखते है । जन्मस्थान अपने पास है । सम्पूर्ण जगत में सम्प्रदाय का प्रथम मंदिर अपने पास है । म्युझियम में प्रसादी की वस्तुए खर्च करे तो कम न हो इतनी है । गर्व रखे । थोडा पुरुषार्थ करना पडे । महाराज आप सभी को सुखी और कुशल रखे । ऐशी प्रार्थना है ।

(२) धमाशणा मंदिर पंचम पाटोत्सव और बहनो के मंदिर में पुनः प्रतिष्ठा के अवसर पर ता. २४-११-२०२२ : अधिक आनंद हुआ । कारण भगवान का दर्शन हुआ । साथ ही साथ भगवान के भक्तो का दर्शन हुआ । इसकी महिमा भगवानने स्वयं किया है । तीन दर्शन महत्वपूर्णहै । भगवान का, भक्त का और स्वयं का । सीढी चढकर एवम् उतरकर विचार करना चाहिए । कैसे उतरे थे । और कैसे उतरे ? (भगवान) सत्य है न ? मंदिर में दर्शन करने के बाद पुराने सभा मंडप गये । वहा ँ पर जो मूर्तिया है । चरणारविंद है उनका मूल्य है क्या ? है ? कही पर मिलती है ? नही मिलती है । मैं आप लोगो के भाग्य से आया हूँ । दर्शन करके मेरा मन भर गया । अग्रजोने कितने भजन किये होगे । हम और आप यहाँ ऐसे नही बैठेहै । रुपया हो तो फुटकट मिलता है । वीज बल अधिक शक्तिशाली होता है । पूर्वजोने कितनी भक्ति की है । उस समय कहाँ इतनी सुविधा थी । इस लिये युवको ! आप सभी को वह सुरक्षित रखना है । दूसरा भगवान का बनकर रहे । जो सबका होगा । वह इसका भी होगा । अंत में दु:खी होना होता है । गृहस्थ को तो अनुभव होता ही है । हम भी गृहस्थ ही है । भगवान, सिद्दान्त और परम्परा सुरक्षित रखने पर कही चक्कर नही मारना पडता है । यह सत्य है । अडसढ तीरथ (तीर्थ) चरण में करोडो काशी गया । भगवान के चरणो में कई कोटि काशी है । इसकी गणना नही कर सकते उतना बल चरणो में हैं ।

स्थायी रुप में कहता हूँ, वातावरण बनाये । उपदेश से नही वातावरण से प्रभाव पडता है। उपदेश से नही होता है । जैसा वातावरण मंदिर में है वैसा ही वातावरण घर का बनाकर रखे । तथा अन्दर भी रखे । तीनो के सन्तुलन से कार्य होगा । उपदेश की आवश्यकता कम पडेगी । महाराजजी हम लोगो के लिये कितना कार्य किये है । और बोले है कि हमारे कार्यो को देखे । हमारा कार्य सफल होगा । गाँव की भाषा में कहे तो भलाई करके दूर रहे । यह शब्द हम बार बार सुनते आ रहे है । यह सीधे बात मुख में आ जाती है । लेकिन विचार करने के बाद ज्ञात होता है कि इस ळब्द का महाराज की वाणी में कितना महत्व है । महाराज हम लोगो के लिये अधिक विचरण किये है । अब माणकी पर बैठाकर अधिक धुमा दिये है । सीधे चलने पर भला होगी । हम लोगो को भगवान जैसे भगवान मिले है । फिर भी हम लोग परेशान है । इनसे मिलने के बाद भी यदि हम लोग दु:खी है तो वह अपनी कमी है । दु:खी नही होना चाहिए । ऐसा नही हुआ । वैसा नही हुआ । हमे क्या होता है । यह अपनी अन्तरआत्मा से पूछे । कुछ लोग समझकर भी पागल बनते है ।

यह आप का दश गाँव है । यहाँ पर जमीन का भाव बढा है । अब क्या हालात है । धैर्य रखना । धीरे धीरे कार्य करे । इसमें अन्ततः परिवार समाप्त हो जाती है । यह आप को ज्ञात भी है । और सत्य भी है । यह कोई दंतकथा नही है । एक राजा थे । ऐसी बात नही है । यह आज की बात है । हमें अपने उपर ध्यान देना है । मुझे गर्व है । दसगाँव का समाज है । वहाँ पर कोरोना नही हुआ । कोरोना अच्छा या खराब था । उसकी भी सूचना नही थी । डर से मानव परेशान हो गये थे । १४ दिन तक बंद रखते थे । इसके बाद क्या ? कोरोना की तो वैक्सीन है । लेकिन दिमाग में खराब कीडा घुश जाये तो क्या होगा । सभी लोग अवसर की तलास में है । इसके लिये महाराज ने भारी शब्द का प्रयोग किये है । अर्थात् ध्यान रखे । ऐसा जाने नही दे । इसमें नरमाई का प्रभाव न दिखाये । हम लोग ऐसे वैसेनही है ? भगवान जैसे भगवान मिले है । तो भगवान के लिये क्या नही कर सकते है । असत्य बोलने पर उपवास करे । फराली लोट वाला नही यह एक नई प्रणालिका बन रही है । एफ.डी.ए. विभाग चेक

करे । तो कितनी मिलावट है । जिस दिन झूठ बोले उस दिन पूर्ण उपवास करे । यह महाराज का वचन है । ये हमारी बात नही है । मै किसी दिन अपनी बात नही करता हूँ । महाराज की बातो का दृढ विश्वास रखेगे तो सुखी हो जायेगे । दुःखी करने वाले जीव को देखकर बचे । यह थोडा कुछ अधिक हो गया है । दूषण तो है । फिर भी आनंद पूर्वक मर्यादा में रहे।

व्याकुल नही होना है । भारत का क्या होगा ? युक्रेन का क्या होगा? पूरे गाँव की पंचायत के स्थान पर आप का क्या होगा ? उसे सर्व प्रथम सोचे । बच्चे बच्चियों का सर्व प्रथम विचार करे । पहले मगस तथा सींगदाने का प्रसाद मिलता था । मुख में आ जाने पर सत्संग हो जाता था । नवीन पीढी अधिक स्मार्ट है । वातावरण के बिना काम नही हो सकता है । मोबाईल में रिंग बजने पर आप कहते है कि बोल दो हम घर पर नही है । यह बात आप को छोटी लगती होगी । ये छोटी छोटी बाते बडा प्रभाव डालती है । इसी नवम्बर २०२२ की बात बता रहा हूँ । शिक्षापत्री २१२ कीबात के बाहर की नही है । कोई गप्पा नही है । सिद्दान्त और परम्परा बदले नही अन्यथा कही पर खो जायेगे । आप ध्यान देते है और देना भी चाहिए । मुझे गर्व है कि दस गाँव में यह जीव नही लगा है । ऐसे आप बने रहना । स्वाभीमान रखना, देव को रखो, परिवार के प्रति स्नेह रखे । बच्चे-बच्चिया आप को देखकर वैसा बनेगे । उपदेश देकर निर्माण करना होतो प्रयास करके देख लेना . यह विपरीत प्रभाव डालेगा । कई लोगो को इसका अनुभव है । वे लोग समझ गये होगे । अनुभव बडी पूँजी है । उपर से मिला है । इसलिये हम लोग साथ बैठे है । एक दूसरे के प्रति प्रेम भाव रखो । दोष मत देखो । गुणदेखो यह महाराज का कहना है । युवक सभा में बैठे है । उन्हे तो गर्व होगा। आज युवक आते कहा है ? मोखासण, वह, करजीसण तो खाली हो गया है । सही बात है न ? ये बच्चे केवल यहाँबैठे नही है । रसोई में काम भी करते होगे । तब प्रसाद मिलता होगा । हम लोग सुखी है । और सदैव सुखी रहेगे । दुःखी होना है तो यहाँ से वहाँ भ्रमण करो । यदुवंशियो का इतिहास तो पता ही होगा । सुखी रहना हो तो देव का आसरा रखे देव को आगे रखे । तो काम पूर्ण होगा । लगाव, प्रेम और अपनापन रहता है । भगवान के प्रति निष्ठावान रहे । भगवान शक्ति दे । ऐसी प्रार्थना है ।

नूतन शिखरवाला मंदिर हिंमतनगर
श्री स्वामिनारायण मंदिर, श्री नरनारायणदेव मार्ग,
सहकारी जीन रोड, हिंमतनगर-३८३००१. मो. :
९८९८०११६१६

श्री नरनारायणदेव आदि देवो की ध्वजा के यजमान रु।. ११000-00 प.भ. लालजी देवजी केराई परिवार (रामपर-वेकरा-कच्छ)

अक्षरवास

मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर के स.गु. स्वामी श्री लक्ष्मीप्रसादासजी गुरु स.गु. पुराणी स्वामी पुरुषोत्तमचरणदासजी कार्तिक सुद-८ दिन सोमवार ता. ०१-११-२०२२ के दिन शेखपाट धाम में श्रीहरि का अखंड स्मरण करते अक्षरनिवासी हुए है । उनके अक्षरवास से मूली प्रदेश के सत्संग को अटूट कमी हुई है ।

टोरडा श्री स्वामिनारायण मंदिर (कालुपुर मंदिर) में रहने वाले संत स.गु. स्वामी जयकृष्णदासजी कार्तिक वद-२ ता. १०-१-२०२२ गुरुवार के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर के पार्षद प्रवीण भगत गुरु पुराणी स्वामी माधवचरणदासजी ता. ८-१२-२२२ दिन गुरुवार को श्रीहरि नाम स्मरण करते अक्षरनिवासी हुए है।

श्री स्वामिनारायण मंदिर, नारणपुरा - अहमदाबाद महंत स्वामी मो. : ७०४६७१२०००

अहमदाबाद शहर के समीप श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रसादी के गाँव

सोजा

- अहमदाबाद कालुपुर मंदिर से सडक द्वारा १ घंटे १५ मिनट
- अमहादाबाद विमान अड्डे से १ घंटा ५ मिनट

संकलन : प्रफुल खरसाणी

यहाँ के हरिमंदिर का प्रवेश द्वार पश्चिम में है। मंदिर के प्रमुख द्वार के उपर नया भव्य, सुशोभित विशाल टावर है। यहाँ पर भगवान श्री स्वामिनरायण प्रतिष्ठित है। गाँव के पूर्व दिशा में चबूतरे पर श्रीहरि के चरणारविंद प्रतिष्ठित करके रखा गया है। जहाँ पर श्रीहरि माणकी घोडी खडी करके खडे रहे थे।

भगवान श्री स्वामिनारायण जब दंढाव्य देश में विचरण करते थे। तब गाँव को अपने चरण कमल से शुद्ध करते थे। भगवानश्री स्वामिनारायण कोलवडा इत्यादि गाँवो में विचरण करते एक बार सोजा गांवमें पधारे थे। सोजा गाँव के भक्तजन भक्ति पूर्वक श्रीहरि का स्वागत (सामैया) किये थे। अपने घर में श्रीहरि को पधरवाये थे। श्रीहरि उनके मनोरथ पूर्ण करके वहाँ से गढपुर पधारे थे। स.गु. श्री निष्कुलानंद स्वामी ''भक्तचिंतामणि'' ग्रन्थ के प्रकरण ११९ में सोजा गाँव के भक्तो का वर्णन निम्नानुसार किये है।

कणबी देवजी रहे सोजे, भजे प्रभु ने सुखमोजे ॥१९॥

साथ ही साथ ''श्री घनश्याम लीलामृत सागर'' उ. तरंग ६९ में भी वर्णन निम्नानुसार है।

इस तरह श्रीहरि नारदीपुर से सोजा गाँव प्रतिष्ठित है। अपने आश्रित भक्तो को ज्ञान देकर तथा मनोरथ पूर्ण करके उनकी सेवा को स्वीकार किये थे। वहाँ से श्रीहरि नारदी गाँव पधारे थे। इस तरह सोजा गाँव की भूमि अक्षराधिपति पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण ने अपने चरणकमल से प्रभावशाली और पवित्र किये है।

श्रीजी महाराज सोजा के पटेल नागरदास और कडिया को अक्षरधाम का अवर्णनीय सुख दिये थे।

एक समय सोजा गाँव के पटेल नागरदास विमार थे। उनके भाई नथुभाई उनके पास बैठे थे। उस समय नागरदास उपर देखने लगे। तभी नथुभाईने पूछा कि भाई उपर क्या देख रहे है। महाराज के बारे मे सोचो तभी नगारदास बोले कि ''मै उपर नही महाराज की मूर्ति देख रहा हूँ। ये हरिचरणदासजी तथा ५ साधु आये है। ये लोग कह रहे है कि कल महाराज आप को लेने आ रहे है। और आज हम लोग कडियाभाई को लेने जा रहे है।'' तभी नथुभाई बोले वह तो सत्संगी नही है। तभी नागरदास बोले ''यह तो सत्संगी नही है। लेकिन उसकी माँ सत्संगी थी। उसने साधु को आटा दिया था। उस दिन से बहन से नही दला जा सकता है। वह कडिया दश शेर बाजरा दाला था। उस पुण्य के कारण उसे लेने जा रहा हूँ. ऐसी बात कर रहे है। इतने में नागरदास का लडका आया और कहा वह पशुओ का हराचारा लाकर आ रहे थे। इसके बाद कडिया तालाब में स्नान करने गया। उसे पानी मे मिर्गी आई आयी। शरीर त्याग तथा उसे लोग ले गये।

इस प्रकार श्रीजी महाराज अपने आश्रित का कल्याण करते है। इसमें कोई संशय नही है। क्योकि कडिया सत्संगी नही था। लेकिन उसकी माँ सत्संगी थी। इस कारण से कडिया का महाराजने कल्याण किया। इस प्रकार श्रीजी महाराज अपने आश्रितो का कल्याण करते है। श्रीहरि गाँव में पधारकर अपने ऐश्वर्य, प्रताप को दिखाकर धर्म की पुष्टि किये है।

"ઉત્સવ" કાર્યક્રમની રૂપરેખા

પ.પૂ. ધર્મકુળના વરદ્ હસ્તે તથા વરીષ્ઠ સંતો તથા યજમાનશ્રીની ઉપસ્થિતિમાં હવેલી દિવ્ય પ્રદર્શનમ્ ઉદ્‌ઘાટન તથા ભવ્ય આતશબાજી

તા. ૧૯-૧-૨૦૨૩, ગુરુવાર

પ્રતિદીન કથા સત્ર

સવારે : ૮:૦૦ થી ૧૧:૦૦ કલાકે
સમય : સાંજે ૩:૩૦ થી ૫:૩૦ કલાકે

પ્રતિદીન વ્યાખ્યાનમાળા

સવારે : ૧૧:૦૦ થી ૧૧:૧૫ કલાકે
સમય : બપોરે ૩:૦૦ થી ૩:૩૦ કલાકે

પ્રથમ દિવસ (તા. ૨૦-૧-૨૦૨૩, શુક્રવાર)

પોથીયાત્રા

શ્રી રાધાકૃષ્ણ દેવ શ્રી હરિકૃષ્ણ મહારાજનાં પવિત્ર ઉંબરે વેદોક્ત વિધીથી પોથીજીનું ભાવપૂજન અનેવાજતે ગાજતે શ્રી સ્વા. મંદિરથી શ્રી માંડવરાય દાદાના મંદિરે થી મહોત્સવ સ્થળ સુધી દિવ્ય ભવ્ય પોથીયાત્રા
સમય : સવારે ૭:૦૦ કલાકે

મહોત્સવ મુખ્ય દ્વાર ઉદ્‌ઘાટન

પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી તેજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી
પ.પૂ.ધ.ધુ. ૧૦૦૮ આચાર્ય શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી તથા
અધ્યક્ષ : પ.પૂ. ભાવિ આચાર્ય ૧૦૮ શ્રી વ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી
સમગ્ર ધર્મકુળનાં વરદ્ હસ્તે તેમજવરીષ્ઠ સંતો અને યજમાનશ્રીઓના હસ્તે
સવારે ૯:૦૦ કલાકે

શ્રી સ્વામિનારાયણ મહામંત્રની અખંડધૂનનો પ્રારંભ

અધ્યક્ષ : પ.પૂ. ભાવિઆચાર્ય ૧૦૮
શ્રી વ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીના વરદ્ હસ્તે
સવારે ૯:૧૫ કલાકે

મહોત્સવ મંગલ દીપ પ્રાગટ્ય

સમગ્ર ધર્મકુળ તેમજ વરીષ્ઠ સંતોનાં કરકમલો દ્વારા
સવારે ૯:૩૦ કલાકે

મંગલ રૂડા આશીર્વાદ

પ.પૂ. મોટા મહારાજ
શ્રી તેજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

મંગલ ઉદ્‌બોધન

સ.ગુ. શા. સ્વા. પુરૂષોત્તમપ્રકાશદાસજી

આરોગ્યલક્ષી સામાજીક જાગૃતિલક્ષી સેમીનાર

બપોરે ૨:૦૦ થી ૩:૦૦ કલાકે

શ્રી રાધાકૃષ્ણ દેવ શ્રી હરિકૃષ્ણ મહારાજ સમક્ષ નિજ મંદિરમાં ચોકલેટ તેમજ વિવિધ પ્રકારના શરબતના અન્નકૂટ દર્શન

સવારે ૯:૦૦ થી ૧૨:૦૦ કલાકે

સદ્. શ્રી બ્રહ્માનંદ સ્વામીના પૂજાના શ્રીશાલીગ્રામજીનું સવા લાખ તુલસીપત્રો દ્વારા ભાવપૂજન અને પુષ્પાભિષેક

સવારે ૧૧:૧૫ કલાકે

દ્વિતીય દિવસ (તા. ૨૧-૧-૨૦૨૩, શનિવાર)

ષોડશોપચાર વિધિપુરઃસર શ્રીહરિની દિવ્ય મહાપૂજા (તા. ૨૧-૧-૨૦૨૩ થી તા. ૨૪-૧-૨૦૨૩ સુધી દરરોજ)

સવારે ૭:૦૦ થી ૯:૦૦ કલાકે

શ્રી રાધાકૃષ્ણ દેવ શ્રી હરિકૃષ્ણ મહારાજ, નિજ મંદિરમાં ફળકૂટોત્સવ તથા વિવિધજ્યુસના અન્નકૂટ દર્શન

સવારે ૯:૦૦ થી ૧૨:૦૦ કલાકે

નૂતન પ્રકાશિત વિવિધ ગ્રંથોનાં વિમોચન

શ્રી ધર્મકુળના વરદ્ હસ્તે
સવારે ૧૧:૧૫ કલાકે

શ્રી ઠાકોરજીના વસ્ત્ર - અલંકારોની ભવ્ય છાબયાત્રા

સવારે ૧૧:૩૦ કલાકે

આરોગ્યલક્ષી સમાજ જાગૃતિલક્ષી સેમીનાર

બપોરે ૨:૦૦ થી ૩:૦૦ કલાકે

તૃતીય દિવસ (તા. ૨૨-૧-૨૦૨૩, રવિવાર)

શ્રી રાધાકૃષ્ણ દેવ શ્રી હરિકૃષ્ણ મહારાજ, નિજ મંદિરમાં ડ્રાયફ્રુટના ભવ્ય અન્નકૂટ દર્શન
સવારે ૯:૦૦ થી ૧૨:૦૦ કલાકે

વિપ્ર બટુકોને સમૂહ યજ્ઞોપવીત તેમજ બ્રહ્મચોર્યાસી
સવારે ૯:૦૦ થી ૧૨:૦૦ કલાકે

વરિષ્ઠ સંતોનું સન્માન
સવારે ૧૧:૧૫ કલાકે

ચોથો દિવસ (તા. ૨૩-૧-૨૦૨૩, સોમવાર)

શ્રી રાધાકૃષ્ણ દેવ શ્રી હરિકૃષ્ણ મહારાજ, નિજ મંદિરમાં વિવિધ શાકભાજીના દિવ્ય હાટડી દર્શન
સવારે ૯:૦૦ થી ૧૨:૦૦ કલાકે

શ્રી મુળી મંદિરના નિર્માણકર્તા કવિ સમ્રાટ સ.ગુ. શ્રી બ્રહ્માનંદ સ્વામીનું તેમજ શ્રી મુળી મંદિરના પ્રથમ મહંત સ.ગુ. શ્રી દેવાનંદ સ્વામીનું દિવ્ય ભાવપૂજન
સવારે ૧૧:૧૫ કલાકે

ત્રિદિનાત્મક શ્રીહરિયાગ મહાયજ્ઞ
સવારે : ૮:૦૦ થી ૧૨:૦૦ કલાકે
સાંજે : ૨:૦૦ થી ૬:૦૦ કલાકે

દેહશુદ્ધિ
સવારે ૧૦:૦૦ કલાકે

શ્રી રાધાકૃષ્ણ દેવ શ્રી હરિકૃષ્ણ મહારાજ, આદિદેવોના ચાંદીના વાઘાની અર્પણવિધી
સવારે ૧૧:૦૦ કલાકે
(ધર્મકુળ પરિવાર તથા પૂ.સંતો તથા દાતાશ્રીઓની હાજરીમાં)

શ્રી યજ્ઞનારાયણ દેવનું અરણીમંથન દ્વારા પ્રાગટ્ય તેમજ સ્થાપન-પૂજન
બપોરે ૨:૦૦ કલાકે

મહિલા મંચ
પ.પૂ. અ.સૌ. લક્ષ્મીજીસ્વરૂપાશ્રી ગાદીવાળાશ્રી તેમજ
પ.પૂ. મોટા ગાદીવાળાશ્રી તેમજ પૂ. શ્રીરાજાના સાનિધ્યમાં
બપોરે ૨:૦૦ થી ૩:૧૫ કલાકે

સભામંડપમાં બિરાજમાન મહાપ્રતાપી શ્રી ઘનશ્યામ મહારાજનું શ્રી દિવ્ય રાજોપચાર મહાપૂજન તેમજ ભવ્ય પુષ્પાભિષેક
બપોરે ૨:૦૦ થી ૪:૦૦ કલાકે

કથા વિરામ સમયે સભામંડપમાં સમૂહ મહાઆરતી
સાંજે ૬:૦૦ કલાકે

પાંચમો દિવસ (તા. ૨૪-૧-૨૦૨૩, મંગળવાર)

શ્રી સુવાસિની બા નાં પ્રસાદીભૂત કાંબી અને કડલાઓનું પૂજન-અર્ચન
સવારે ૧૧:૧૫ કલાકે

શ્રી રાધાકૃષ્ણ દેવ શ્રી હરિકૃષ્ણ મહારાજ, નિજ મંદિરમાં માવાની વિવિધ મીઠાઈઓના અન્નકૂટ દર્શન
સવારે ૯:૦૦ થી ૧૨:૦૦ કલાકે

શ્રી શાકોત્સવનો દિવ્ય વઘાર
શ્રી ધર્મકુળના વરદ્ હસ્તે
સવારે ૧૧:૩૦ કલાકે

યુવામંચ તથા બાળમંચ
તમામ ગામોના શ્રી નરનારાયણદેવ યુવક મંડળ તેમજ
શ્રી નરનારાયણ દેવ બાળમંચના તમામ બાળકોને લઈને
સહુ સત્સંગીઓએ ખાસ ઉપસ્થિત રહેવાનું છે.
બપોરે : ૨:૦૦ થી ૩:૦૦ કલાકે

શ્રી રાધાકૃષ્ણ દેવ શ્રી હરિકૃષ્ણ મહારાજ, નિજ મંદિરમાં દિવ્ય શ્રી રાજોપચાર મહાપૂજન
બપોરે ૨:૦૦ થી ૪:૦૦ કલાકે

પ.પૂ. ભાવિ આચાર્ય મહારાજ શ્રી વ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજના નેતૃત્વમાં
બપોરે : ૧:૩૦ થી ૩:૧૫ કલાકે

શ્રી ભોગવતી ગંગા પૂજનોત્સવ તેમજ મહાઆરતી - સાંજે ૬:૩૦ થી ૭:૩૦ કલાકે

છઠ્ઠો દિવસ (તા. ૨૫-૧-૨૦૨૩, બુધવાર)

શ્રી રાધાકૃષ્ણ દેવ શ્રી હરિકૃષ્ણ મહારાજ,નિજ મંદિરમાં માવાની વિવિધ ફરસાણ વાનગીઓના અન્નકૂટ દર્શન
સવારે ૯:૦૦ થી ૧૨:૦૦ કલાકે

જળયાત્રા
બપોરે ૨:૦૦ થી ૩:૦૦ કલાકે

હવેલી પૂજન
સાંજે ૭:૦૦ કલાકે

મંદિરના દિવ્ય પરિસરમાં લેઝર તેમજ લાઈટીંગ શો, ભવ્ય આતશબાજી તેમજ મંદિરનું પૂજન તેમજ સમૂહ મહાઆરતી
સાંજે ૬:૩૦ થી ૮:૩૦ કલાકે

મહોત્સવ પૂર્ણાહુતિ સાતમો દિવસ (તા. ૨૬-૧-૨૦૨૩, ગુરુવાર)

યજમાનશ્રીઓ દ્વારા પાટોત્સવ અભિષેક પૂજન
સવારે ૫:૩૦ થી ૬:૦૦ કલાકે

શ્રી રાધાકૃષ્ણ દેવ શ્રી હરિકૃષ્ણ મહારાજનો ભવ્ય મહાઅભિષેક તેમજ પુષ્પવૃષ્ટિ
સવારે ૬:૩૦ થી ૭:૩૦ કલાકે

શ્રી રાધાકૃષ્ણ દેવ શ્રી હરિકૃષ્ણ મહારાજ, નિજ મંદિરમાં છપ્પનભોગ અન્નકૂટ દર્શન
સવારે ૧૦:૦૦ થી સાંજે ૫:૦૦ કલાકે

શ્રી શિક્ષાપત્રી ગ્રંથરાજ પૂજન
સવારે ૯:૦૦ કલાકે મહોત્સવ સ્થળે

પ્રજાસત્તાક પર્વ નિમિત્તે ભવ્ય રાષ્ટ્રીય ધ્વજવંદન કાર્યક્રમ (કથા સ્થળે)
શ્રી ધર્મકુળના વરદ્ હસ્તે તેમજ રાજકીય સામાજીક આગેવાન મહાનુભાવશ્રીઓના સાનિધ્યમાં - સવારે ૯:૩૦ કલાકે

વસંતના વધામણા - રંગોત્સવ
ધર્મકુળના વરદ્ હસ્તે પરંપરાગત રીતે વસંત પૂજન - આરતી (મંદિરમાં દેવોનાં સાનિધ્યમાં)
બપોરે ૧૨:૦૦ કલાકે

રંગોત્સવ (મહોત્સવ સ્થળે)
શ્રીહરિનાં અપર સ્વરૂપ ત્રણેય ધર્મવંશી ધર્મકુળનાં કરકમળો દ્વારા સંપ્રદાયમાં પ્રથમ વખત ત્રણ અલગ અલગ મંચ પરથી રંગોત્સવનો દિવ્યાનંદ

રાત્રી સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમ : તા. ૨૦-૧-૨૦૨૩ થી ૨૪-૧-૨૦૨૩ સુધી

સમય : રાત્રે ૮:૦૦ થી ૧૧:૦૦ કલાકે

નોંધ :- આ મહોત્સવમાં ૧૧,૦૦૦/- થી લઈને ૪૫,૦૦૦/- સુધીની સેવાના યજમાનશ્રીઓને મહાપૂજનમાં બેસવાનો સજોડે લાભ પ્રાપ્ત થશે.
- આ મહામહોત્સવમાં ૫૧,૦૦૦/- થી લઈને તમામ મોટા યજમાનશ્રીઓ તેમજ યજ્ઞના તમામ મુખ્ય યજમાનશ્રીઓ સજોડે બેસી યજ્ઞનારાયણને વેદમંત્રની રૂચાઓના ગાન સાથે મહાન પવિત્ર આહુતિઓ પ્રદાન કરશે.

મહોત્સવનું લાઈવ પ્રસારણ

KALUPUR MANDIR

સમગ્ર ગુજરાત સહિત દેશ અને વિદેશમાં પ્રસારિત થતી ગુજરાતની અગ્રેસર ધાર્મિક ટીવી ચેનલ શિક્ષા ટીવી પર

GTPL 552 | DL GTPL 577 | IN DIGITAL 907/917 | HARSH CABLE - 518

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग की सूची-डिसम्बर-२०२२

ता. ०१-१२-२०२२	प.भ.श्री मधुबेन वासुदेवभाई ठक्कर - अमदावाद
ता. ०२-१२-२०२२	अ.नि. अमृतभाई नरसिंहभाई पटेल - मणीनगर - ह. आभा, साजन तथा किरात.
ता. ०४-१२-२०२२	प.भ.श्री मेघा जयेशभाई गज्जर तथा यश मनीषभाई - नारणपुरा
ता. ०५-१२-२०२२	प.भ.श्री विमल भरतभाई सापरीया - पूना
ता. ०५-१२-२०२२	प.भ.श्री जतीन भरतभाई सापरीया
ता. ०६-१२-२०२२	प.भ.श्री भरतभाई सोमदासभाई पटेल - मारूसणावाळा - निर्णयनगर
ता. ०७-१२-२०२२	प.भ.श्री केयुरकुमार रमेशभाई रामाणी - निकोल - ह. स्वरूपाबेन.
ता. ०८-१२-२०२२	प.भ.श्री राजेश शामजी राबडीया - बळदिया-कच्छ
ता. १०-१२-२०२२	प.भ.श्री निमिषाबेन पंकजभाई अमीन - यु.एस.ए. - चि. तृषित तथा रिया के विवाह के अवसर पर
ता. ११-१२-२०२२	प.भ.श्री राज कृष्णकान्त पटेल - मेघरजवाळा - हा. केनेडा.
ता. १६-१२-२०२२	प.भ.श्री डॉ. नरेन्द्रभाई डी. भावसार - महेसाणा.
ता. १६-१२-२०२२	प.भ.श्री मौलिक आर. भावसार - यु.एस.ए.
ता. २४-१२-२०२२	प.भ.श्री रमेशभाई अंबालाल पटेल - हाईवे पार्क - साबरमती
ता. २५-१२-२०२२	प.भ.श्री मेहुलभाई कांतिभाई पटेल - अंबापुर - ह. कोकीलाबेन कांतिभाई पटेल - अंबापुर.
ता. २५-१२-२०२२	प.भ.श्री व्रजेशभाई रसिकलाल भावसार - न्यु राणीप.
ता. २६-१२-२०२२	प.भ.श्री धर्मेन्द्रभाई कानजीभाई पटेल - श्री सहजानंदम प्रसादम् - नारणपुरा-अमदावाद.
ता. ३०-१२-२०२२	प.भ.श्री हर्षदभाई रसिकभाई पटेल - भरूच (अमेरिका)

શુભ પ્રસંગે ભેટ આપવા માટે અથવા પોતાના અંગત સંગ્રહ માટે શ્રી નરનારાયણદેવની પ્રતિમાવાળા ૫/૧૦/૨૦ ગ્રામ ચાંદીના સિક્કા મ્યુઝિયમમાં મળશે.

સૂચના : શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં દર પૂનમે પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી સવારે ૧૧-૩૦ કલાકે આરતી ઉતારશે.

સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.

મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬

www.swaminarayanmuseum.in • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "इस स्थान की महिमा अद्‌भुत है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

आज यहाँ पर किस लिए एकत्र हुए है। किसी भी तरह से महापरायण पर जागकर हाजिरीपूर्ण करने के लिये। तभी तो हम सभी को एक अमूल्य अवसर मिला है . पूरी रात प्रभु की भजन करना, इस पवित्र स्थान पर बैठक यदि सच्चे मन से भगवान को याद करेगे तो भगवान आयेगे। शायद हम लोगो के मध्य में हो भी सकते है। लेकिन हम उन्हे देख नही पा रहे है। भगवान को देखने के लिये दिव्य चक्षु चाहिए। माया से दिव्यता नही दिखाई देती है। सच्ची श्रद्धा, पतिव्रता भक्ति तथा अटूट निष्ठा से हम हृदय को दिव्यता प्रदान कर सकते है। ऐसे हृदय में भगवान का पास रहता है। भगवान को बैठने के लिये सोने-चाँदी का सिंहासन आवश्यक नही होता है। उसे शरणागत भक्त के हृदय में निवास करने का आनन्द मिलता है। जहाँ पर उनके नाम का कीर्तन होता है। वहीं भक्तो के मध्य निवास करते है।

हम सभी भाग्यशाली है कि इस चौक में बैठकर भजन करने का अवसर मिला है। आज जितनी बहने यहाँ पर बैठी है। वे भगवान की कृपा और दया बिना उद्देश्य के नही मिलती है। हम सभी भाग्यशाली है कि सभी वस्तु एक स्थल पर मिल रही है। महाराज के वचन है कि वह चार जगह पर बिराजमान रहते है। देव, आचार्य, सत्शास्त्र और सच्चे संतो मे रहते है। यब सब एक ही स्थानप र है। सच्चे मन से नरनारयणदेव की शरणागति स्वीकार करेगे तो सब कुछ स्वयं मिल जायेगा।

जैसे सत्संग की महिमा है। वैसेही स्थान की महिमा होती है। भजन कीर्तन कथा किस जगह पर बैठकर करते है। इसका भी अधिक महत्व है। आज हम लोग जिस जगह पर बैठे है तो उसकी पवित्रता और महत्ता का वर्णन नही किया जा सकता है। यह भूमि इतनी पवित्र है कि मात्र स्पर्श से कल्याण हो जाता है। सोचकर देखे ! इस भूमि पर महाराज के चरण कितनी बार पडे है। अपने चरणो के रज से इस भूमि को महाराजने कई बार स्पर्श किया है। महाराज इस स्थान को माणकी घोडी पर धुमकर चयन किये है। पूरे विश्व के केन्द्र स्थान को यह बनाकर विश्व का सर्व प्रथम सम्प्रदाय का मंदिर यहाँ पर बनाये थे। भरतखंड के राजा ऐसे नरनारायणदेव ने यहाँ पर अपने कर कमलो द्वारा प्रतिष्ठित किये थे। तथा चौक में छत्री के नीचे कईबार सभा किये है। कहने का मतलब यहा है कि यहाँ की भूमि को महाराज नेअपने चरणकमल रज से असंख्य बार स्पर्श किये है। जिस भूमि का हम लोग स्पर्श करते है। यहाँ पर बैठकर घंटो तक भजन कर सकते है। महाराज के स्वधामगमन के बाद भी आदि आचार्यश्री अयोध्याप्सादजी महराज ये लेकर आचार्य श्री वासुदेवप्रसादजी महाराज के निवास स्थान पर कालुपुर मंदिर की हवेली थी। इस सभी के चरण इस भूमिप र पडे है। बड़े बड़े संत यहाँ बैठकर माला फेरे है। तपस्या किये है। इन लोगो के तपोबल से यह भूमि दिव्य और पवित्र हो गयी है। इन सभी के चरणरज भूमि में समाहित है। इस भूमिपर हम सभी को बैठकर भजन करने का अवसर मिलता है। इससे बडी उपलब्ध जीवनमें कुछ हो नही सकता है। स्थान की महिमा अधिक होती है। आज कल सत्संग, कथा, कीर्तन सब कुछ टी.वी. और मोबाईल पर होता है। मंदिर में जाकर

दर्शन करना और आनलाईन दर्शन करने से अधिक अन्तर है । जो अनुभूति, शांति और एकरात्मक उर्जा मंदिर में जाकर प्राप्त होती है । वह आनलाईन से सम्भव नही है । स्थान का प्रभाव होता ही है । कभी विचार किये है कि मंदिर में खुले पग जाने का आग्रह क्यो किया गया है? एक सामान्य बात स्वच्छता है । मंदिर भगवान का घर होताहै । जो पवित्र होता है । वहाँ पर अपने जूते की गंदगी नही जानी चाहिए । दूसरा कारण यह है कि भूमि में भगवान और महान संतो के चरण स्पर्श किये है । उसी भूमि का हम सीधे स्पर्श करते है । इससे आध्यात्मिकता का सीधे स्पन्दन होता है । इससे बुद्धि शुद्ध होतीहै । यदि उस भूमि पर जाने का अवसर मिले तो उसका लाभ लेना चाहिए ।

आज से इसी क्षण से निर्णय करले कि अब तक हो हुआ, अब नही करेगे.नही ज्ञान होने पर अधर्म नही है । पर ज्ञान के बाद अधर्म नही करे । ऐसा नियम आज से बनाले कि मन, कर्म, वचन से कोई कार्य खराब नही करे । नही तो इस भूमि पर आने के बाद कल्याण रुक जाता है । कुछ लोग दश पन्द्रह दिन लगातार मंदिर आते है । फिर आना बंद कर देते है । कुछ अवगुण लेकर चले जाते है । कारण अवसर मिलने के बाद भी अपना कल्याण अविरुद्ध कर लेते है । उपलब्ध अवसर का लाभ नही उठाते है । इस लिये सचेत रहना पडता है । विवेक रखना पडता है । जगह का विवेक भी होना चाहिए। हम जिस जगह जाते है उसी के आधार पर व्यवहार करते है। बडे लोगो के सामने कैसा आचरण करते है । यह तो भरतखंड के राजाका घर है । यहां पर विशेष ध्यान देना चाहिए । यह स्थान अलौकिक है । अलौकिक स्थान पर लौकिक आचरण नही करना चाहिए । अपने कल्याण के लिये इतना तो करना चाहिए । व्यवहारिक संसार में आदमी सोचता है कि जब तक हाथ पैर काम कर रहा है । तब तक परिश्रम करके कमा लेना चाहिए जब अशक्त है । जायेगे तो यहीं काम आयेगा । सही है । ऐसा करना गलत नही है । करना ही चाहिए । गृहस्थ है, घर परिवार है । जीवन जीने के लिये करना चाहिए । इसी प्रकार आध्यात्मिक कमाई भी करना चाहिए । अन्तिम समयमें काम आता है । व्यवहारिक कमाई अर्थात् जमा किया हुआ धन भौतिक आवश्यकता पूर्ण करता है । आध्यात्मिक कमाई अर्थात् जमा भक्ति अन्तिम साँस तक काम आथी है । तो अभी अक्सर है, समय है, हाथ पैर काम कर रहा है । सानुकुलता है तो आध्यात्मिक कमाई कर लेना चाहिए। ८४ लाख में घुमने से अच्छा है कि माला घुमा ले । ऐसा मंदिर ऐसे नरनारायणदेव मिले है । दूसरा क्या चाहिए ? जैसा चाहे वैसा कर सकते है । आज प्रात: कुछ बात हो रही थी । मंजुबा ने कहा कि यह तो बड़ा कारखाना है । भगवान बनाकर गये है । मुझे लगा कि कारखाना अर्थात् फैक्टरी होगी । मंजुबाने बताया कि ''पहले के समय में जो बडा निर्माण कार्य होता था । उसे कारखाना कहते थे । मैने कहा ''हम तो कभी ऐशा सुने नही है ।'' बाद में विचार आया कि वास्तव में यह कारखाना ही है । जिस प्रकार फैक्टरी मे कुछ निर्मित होता है । वैसे यहां पर सच्चे श्रद्धावान सत्संगी बनते है । लेकिन जिसे लगन होती है वही बनता है । कभी-कभी फैक्टरी में ऐसा कच्चा माल आ जाता है । कि उससे कुछ बन नही पाता है । उसे वापस करना पडता है । यहाँ पर स्वभाव के कारण वे लोग यहाँ से दूर हो जाते है । इसमें फैक्टरी का क्या दोष है । भगवान बनाकर भेजे है । इस में कोई त्रुटि तो नही है । और प्रलय तक नही होना है । यहाँ सभी प्रकार की तैयारी है । तैयार आप को होना है । लगाव और् निष्ठा होगी और नरनारायणदेव के प्रति प्रेम होगा तो सब सम्भव है । यह आप पर निर्भर है कि इस भूमि पर आकर नरनारायणदेव का प्रतिदिन दर्शनकरके जीवन में आप को प्राप्त अवसर का लाभ लेते है कि नही, यहाँ पर सब कुछ है । तो आज से दृढ निश्चय करले । इस जन्म को अन्तिम जन्म बनाये ।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद धर्नुमास धुन महोत्सव

भरतखंड के राधाधिराज परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के परम सानिध्यमें तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद के साथ आज्ञा से कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी पू. स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदास के प्रेरणा और मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में ता. १६ डिसम्बर २०२२ से प्रति वर्ष की तरह इस वर्ष धर्नुमास धुन महोत्सव का सुंदर प्रबन्ध किया गया है । प्रातः ५ बजे सर्व प्रथम रंगमहल श्री घनश्याम महाराज के सामने संत-हरिभक्तो द्वारा श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन इसके बाद मंगला आरती के बाद भव्य सभा मंडप में सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन प्रातः ६ से ७ बजे तक हजारो हरिभक्तो संतो द्वारा ढोल नगारा, त्रासा, हारमोनियम, मंजीरा के ताल पर किया गया । इस महालौकिक धुन में छोटे-बडे बच्चे, युवक, वृद्ध, प्रातः स्नान करके पूजा पाठ करके धुन का लाभ लेने आते थे । पूरे महिने की धुनके यजमान के द्वारा परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की अलौकिक मूर्ति भेट में दी गई थी । वर्ष में इसे सामान्य रुप से खरमास भी कहा जाता है । यह हरिभक्तो के लिये उत्सव होता है । ठंडी होने के बाद भी सभा मंडप में बैठने की जगह नही मिल रही थी । इस अहमदाबाद शहर में श्री नरनारायणदेव देश के अर्न्तगत छोटे-बडे ६० जितने मंदिर है । प्रत्येक मंदिर में धर्नुमास धुन की गयी । प्रत्येक मंदिर में पैर रखने की जगह नही मिलती तो भी भक्त खडे होकर लाभ लिये ।

(कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गोमतीपुर में धुन

श्री नरनारयणदेव के आधीन गोमतीपुर श्री स्वामिनारायणमंदिर में ता. १६ डिसम्बर से पूरे महीने सभी हरिभक्तोने प्रातः समूह में श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन-भजन, कीर्तन आदि किये थे ।

(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - गोमतीपुर)

बालासिनोर गाँव में शाकोत्सव

भरतखंड के राधाधिराज परमकृपालु श्री नरनारायणदेव तथा बालासिनोर मंदिर में बिराजमान प्रसादी का श्री राधाकृष्णदेव, श्री हरिकृष्ण महाराज की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. १००८ आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री एवम् पूरे धर्मकुल के आज्ञा-आशीर्वाद से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के प्रेरणा मार्ग दर्शन द्वारा बालासिनोर गांव के आँगन में भव्य-दिव्य शाकोत्सव ता. ७-१२-२०२२ के दिन पूर्ण किया गया था ।

इस शाकोत्सव के अवसर प.पू. १०८ भावि आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री आकर आशीर्वाद दिये थे । इसके बाद यजमान के घर भी गये थे । बाल मंडल और युवक मंडल ने भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम किये थे । जेतलपुर बावला तथा कालुपुर मंदिर से संत आकर आशीर्वाद दिये थे । शाकोत्सव के मुख्य यजमान पद पर प.भ. राकेशभी का दिया ने लाभ लिये थे । आस-पास के गाँव से भक्त शाकोत्सव का लाभ उठाये थे ।

(जनमंगलदास स्वामी - जेतलपुरधाम)

डांगरवा श्री स्वामिनारायण मंदिर (पाटीदार) का २० वाँ वार्षिक पाटोत्सव

भगवान श्री स्वामिनारायण की असीमकृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. १००८ आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री एवम् पूर्ण धर्मकुल के आज्ञा-आशीर्वाद से तथा वाल मंदिर के महंत स.गु. देवप्रसाददासजी स्वामी तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्ग दर्शन प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण भगवान के चरणरज से अंकित महाप्रसादी भूत डांगरवा गाँव के मंदिर का २० वाँ वार्षिक पाटोत्सव ता. २-१२-२०२२ से ६-१२-२०२२ तक उल्लास पूर्व मनाया गया था ।

इस अवसर के उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचान्ह पारायण शा. धर्मनंदनदासजी स्वामी (जेतलपुरधाम) के वक्ता पद से हुई । पूरा प्रबन्ध स.गु. शा. प्रेमप्रकाशदासजी स्वामी (हिंमतनगर महंतश्री) तथा पूर्ण

संरक्षण मंडल, संतो द्वारा किया गया था । इस महोत्सव के अवसर पर प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री आकर दर्शन और आशीर्वाद दिय थे । सांख्ययोगी बहने आयी थी । महोत्सव में पोथी के मुख्य यजमान अ.नि. भक्तिभाई आत्मारामदास पटेल तथा प.भ. श्री बलदेवभाई विसाभाई पटेल तथा छोटे-बडे यजमानश्री ने सेवा का लाभ उठाये ।

(शा. धर्मनंदनदास स्वामी - जेतलपुरधाम)

कुंझाड गाँव में पुनः प्रतिष्ठा महोत्सव

श्री स्वामिनारायण भगवान की असीमकृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. १००८ आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री एवम् पूरा धर्मकुल परिवार की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन प्रेरणा से प्रसादी का कुजाड गाँव में प्राचीन श्री स्वामिनारायण मंदिर की जगह पर नये श्री स्वामिनारायण मंदिर निर्माण के साथ कम्युनीटी हाल का निर्माण पूर्ण हुआ । जिसकी प्राण प्रतिष्ठा ता. १०-१२-२०२२ के दिन प.पू. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा पूर्ण किया गया । गाँव के प्रत्येक हरिभक्त के साथ-सहयोग से यह उत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया ।

(धर्मनंदनदासजी स्वामी - जेतलपुरधाम)

मणीपुर गांव में शाकोत्सव

भरतखंड के अधिष्ठाता श्री नरनारायणदेव, भगवान श्री स्वामिनारायण की असीमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. १००८ आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बडे महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन मे मणीपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ११-१२-२०२२ के दिन भव्य शाकोत्सव का प्रबन्ध किया गया था ।

इस शाकोत्सव के अवसर पर वयोवृध्ध पू. स.गु. स्वामी श्यामचरणदासजी, शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी, स्वामी जगतप्रकासदासजी, स्वामी जनमंगलदासजी आदि संतो ने पू.स.गु. शा स्वामी आत्मप्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम के महंतश्री) आकर सभा में लाभ दिये ते । शाकोत्सव का प्रसाद गाँव के आस-पास के क्षेत्रो में भक्तो को मिला था । पूरे शाकोत्सव के यजमान पद पर प.भ. जगदीशभाई भगवानभाई तथा प.भ. जयंतिभाई मणीलाल पटेल भगत परिवार ने लाभ उठाया था ।

(जनमंगलदास स्वामी - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर रामोल (जामफलवाडी) शाकोत्सव और रक्तदान कैम्प

परमकृपालु परमात्मा श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से प.पू.ध.धु. १००८ आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीके आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (महंतश्री से-२ गांधीनगर) की प्रेरणा से स्वामिनारायण मंदिर रामोल जामफलवाडी के १० वे वार्षिक पाटोत्सव के उपलक्ष्य मे अनेक सामाजिक धार्मिक क्रिया कलाप का प्रबन्ध शास्त्री स्वामी व्रजभूषणदासजी द्वारा किया गया थआ । जिसके अर्न्तगत जनमंगल पाठ, धुन और दिव्य शाकोत्सव का आयोजन किया गया था । सामाजिक प्रवृत्ति में रक्तदान कैम्प का प्रबन्ध किया गया था । उनावा से आये । स्वामी देवप्रकाशदासजी सहित ४० हरिभक्तो ने रक्तदान किये थे । इस अवसर पर स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (महंतश्री और गांधीनगर) संत मंडल सहित आये थे । अहमदाबाद कालुपुर मंदिर में श्री नरनारयणदेव के पूजारी ब्रह्मचारी रामेश्वरानंदजी पधारे थे ।

(स्वामी धर्मस्वरुपदासजी - गांधीनगर)

श्री सहजानंद गुरुकुल (कोटेश्वर) का छठ्ठा वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु परमात्मा श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से प.पू.ध.धु. १००८ आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीके आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदाजी (महंतश्री से-२ गांधीनगर) की प्रेरणा से सहजानंद गुरुकुल कोटेश्वर के छठ्ठे वार्षिक पाटोतसव के अर्न्तगत सद्‌गुरु शास्त्री स्वामी रामकृष्णदाजी के वक्तापद से ''श्री रामचरितमानस'' कथा का सुंदर प्रबन्ध किया गया ता । सभा का संचालन स.गु. शास्त्री श्री नारायणमुनिदासजी (महंतश्री कोटाने किया था ।

कोटेश्वर गुरुकुल में हरिगीता पारायण : सहजानंद गुरुकुल कोटेश्वर मे सद्‌गुरु शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी के वक्ता पद से श्रीहरि गीता कथा का सुंदर प्रबन्ध प.भ. मौलिकभाई रमेशभाई अंबालाल पटेल के यजमान पद से

हुआ ता । जिस में सभा का संचालन पार्षद महेन्द्र भगतने किया था। (स्वामीश्री देवप्रकाशदासजी - उनावा)

इसंड श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा

परमकृपालु परमात्मा श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से प.पू.ध.धु. १००८ आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीके आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदाजी (से-२ गांधीनगर) की प्रेरणा से स्वामिनारायण मंदिर इसंड का जीर्णोध्धार पूरा होने पर निज मंदिर में प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा विधिरुप से पूरी की गयी । ठाकुरजी का सुंदर अन्नकूट किया गया था । प्रतिष्ठा विधिरुप से पूरी की गयी । ठाकुरजी का सुंदर अन्नकूट किया गया था । प्रतिष्ठा के अन्तर्गत संप्रदाय के मूधर्न्य वक्ता सद्‌गुरु शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी के मुख से श्रीमद् भागवत सप्ताह का प्रबन्ध किया गया था । इस अवसर पर स.गु. स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी संत मंडल सहित आये थे । पूरा महोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया था।

(स्वामीश्री देवप्रकाशदासजी - उनावा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा एकार्ध शताब्दी महोत्सव

परब्रह्म परमात्मा सर्वोपरी श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीके आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से माणसा मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी धर्मकिशोरदासजी गुरु स.गु. स्वामी नारायणस्वरुपदासजी की सुंदर प्रेरणा और मार्ग दर्शन से माणसा मंदिर में विराजमान श्रीराधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का अर्धशताब्दी महोत्सव (१५० वर्ष) ता. १८ से २२ दिसम्बर के मध्य भव्यता से मनाया गया था । इस अवसर पर श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचान्ह पारायण पू. स.गु. शास्त्रीस्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) के वक्ता पद से पूर्ण हुआ । इसके पश्चात विजय स्तम्भ, वेद पारायण तुलसीपत्र अर्चन विधि श्री विष्णुयज्ञ, संहिता पाठ, सांस्कृतिक कार्यक्रम किये गये । अवसर के मध्य प.पू. लालजी महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री भी आये थे । सभी को आशीर्वाद दी थी । ता. २२-१२-२२ के दिन पपू. धर्मधुरन्धर आचार्य महाराजश्री आये थे । और निज मंदिर में ठाकुरजी की आरती करके सभा में आये थे । कथा की पूर्णाहुति की आरती किये । छोटे-बडे यजमान तथा संत एवम् स्वामी लोगो का सन्मान करके आशीर्वाद दिये थे । इस उत्सव में तीर्थो से आये संत और सांख्ययोगी बहने भी थी । महंत स्वामी के गुरु पू. महंत स्वामी नारायणस्वरुपदासजी उत्सव के प्रेरक रहे थे । (कोठारीश्री माणसा मंदिर)

कलोल (पंटवटी) श्री स्वामिनारायण मंदिर पांचवा पाटोत्व

परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्यश्री महाराजश्री के आज्ञा तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के अध्यक्षता में स.गु. शा. स्वामी गुरुप्रसाददासजी की प्रेरणा - मार्गदर्शन में श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल (पंचवटी) श्री गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज का पांचवा पाटोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया था । इस अवसर के उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिजीवन ग्रन्थ की कथा पू. स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकासदासजी (जेतलपुर) के वक्ता द्वार की गयी । कथा के मध्य प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री भी महाराजश्री और प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री अये थे । और मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा को आशीर्वाद दि थी।

इस अवसर पर श्री महाविष्णुयज्ञ भगवान का भव्य राजोपचार और कलोल शहर में भव्य शोभायात्रा निकली थी । सम्पूर्ण प्रबन्ध यहाँ के मंदिर के महंत शा. यज्ञप्रकाशदासजी और हरिभक्त किये थे । देश-विदेश के हजारो संत-हरिभक्तो ने अलौकिक लाभ लिये ।

(महंत स्वामी कलोल)

मूली प्रदेश

मूली "उत्सव" के उपलक्ष्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर लिम्बडी शाकोत्सव

मूलीधाम निवासी परमकृपालु श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य माराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से यहाँ के महंत स्वामी के प्रेरणा से लींबडी श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूली मंदिर के ''उत्सव'' के उपलक्ष्य में ता. २२-१२-२२ के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा भव्य शाकोत्सव किया गया । जिस में हजारो हरिभक्तोने भाग लिया । प.पू. लालजी महाराजश्री ने और सभी हरिभक्तोने मूली मंदिर के उत्सव में तन, मन, धन से सेवा प्रदान किये थे । इस अवसर पर मूलीधाम के अनेक संत आये थे ।

(महंत स्वामी लींबडी)

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

भादरवा सुद-२ प.भ. अ.नि. हंसाबेन दिनेशभाई सोनी (अमदावाद), प.भ. प्रविणचंद्र रामाभाई पटेल (वडोदरा), प.भ. बावडीया चंपाबेन लालजीभाई (निकोल), प.भ. मधुभाई, मोहनभाई घनश्यामभाई (निकोल), प.भ. चौधरी लीलाबेन दिलीपभाई (प्रतापपुरा). **भादरवा सुद-३** प.भ. मधुभाई धरमशीभाई पटेल (अमदावाद). **भादरवा सुद-४** प.भ. भगवानजी लालजी अधेरा (अमेरिका), प.भ.अ.नि. ताराबेन जोशी (उतराखंड), प.भ. आर्यन महेशभाई पटेल (कुडासण), प.भ. हिंमतभाई वशरामभाई लक्कड (अमदावाद). **भादरवा सुद-५** प.भ. विनोदभाई अधेरा (अमेरिका). **भादरवा सुद-६** प.भ. वृजेश धीरूभाई सेलडीया (अमदावाद), प.भ.अ.नि. नगीनभाई प्रेमजीभाई पटेल, प.भ. पटेल त्रिकमभाई बेचरभाई (साबरमती). **भादरवा सुद-७** प.भ. सान्वीबेन भावेशभाई (सरा), प.भ. वाघेला जीतेन्द्रसिंह गंभीरसिंह (गोधावी), प.भ.अ.नि. सोनी ईलाबेन दिनेशभाई, प.भ. अशोकभाई चौधरी (वाली राज.). **भादरवा सुद-८** प.भ. कुश राजुभाई (साबरमती), प.भ.अ.नि. नागजीभाई दुधाभाई जीयाणी (कुंडळ), प.भ. जयंतभाई परसोतमभाई पटेल (अमदावाद), प.भ. पटेल पूजन मौलिकभाई (देवडा) **भादरवा सुद-१०** प.भ. देवजी मावजी जसाणी (बळदीया-कच्छ), प.भ. नितीनभाई जयंतीभाई वालाणी (अमदावाद), प.भ.अ.नि. मावजीभाई शीवजीभाई भावाणी (गडानी-कच्छ), प.भ.अ.नि. मानबाई मावजीभाई भावाणी (गडानी-कच्छ) **भादरवा सुद-१२/१३** प.भ. पटेल जनककुमार गोपालदास (अमदावाद), प.भ.अ.नि. रतनबाई विसराम पिंडोरीया (मानकुवा-कच्छ), प.भ. रावजीभाई डायाभाई पटेल (अमदावाद), प.भ. गोविंदभाई नानजीभाई गोरसीया (सुखपर-कच्छ), श्री राधाकृष्णदेव (मुंबई), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ), प.भ. लालजी परबत भंडेरी (मांडवी-कच्छ). **भादरवा सुद-१४** प.भ. श्रीशिवांस छत्रसिंह परमार (साणंद). **भादरवा सुद-१५** प.भ.अ.नि. भरतभाई जादवजीभाई सोनी (अमदावाद), भक्ति महिला मंडळ (जीरागढ), प.भ. मंजुबेन मनजीभाई हालाई (मांडवी-कच्छ), प.भ.अ.नि. चिमनलाल गोरधनदास पूजारा (अमदावाद), प.भ. गोपाल कानजीभाई वेकरीया (सुखपर-कच्छ)

भादरवा वद-१ प.भ. दिलीपसिंह गोविंदसिंह डाभी (चांदलोडीया), प.भ. धनजीभाई मनजीभाई गज्जर (अमदावाद), प.भ. मनोजकुमार जयंतीलाल (डांगरवा), प.भ.अ.नि. चंद्रिकाबेन फुलचंददास सोनी (अमदावाद), प.भ. जयेशभाई वासुदेवभाई भुवा (आणंद), प.भ.अ.नि. रतनबेन लवजीभाई चौधरी (बालवा), प.भ. देव रूपेशभाई पटेल (अमदावाद), प.भ. मनोजभाई एस. सोनी, प.भ. घनश्यामसिंह राणा (गांधीनगर), प.भ.अ.नि. अशोककुमार जयंतीलाल सोनी (अमदावाद). **भादरवा वद-२** प.भ.अ.नि. भूपतभाई नानजीभाई शिंगाळा (अमदावाद), महिला मंडळ (सुरत), प.भ. बळदेवभाई पटेल (राजपुर), प.भ. शैलेषकुमार अमृतलाल पटेल (ईटादरा). **भादरवा वद-३** प.भ.अ.नि. जसवंतभाई रणछोडलाल भावसार (अमदावाद), प.भ. भीखाभाई गोविंदभाई परमार (अमदावाद), प.भ. देवकुंवरबेन वल्लभभाई सुतरीया (धंधुका). **भादरवा वद-४** प.भ. केसरबाई रामजी हालाई (कच्छ). **भादरवा वद-५** प.भ. पटेल जयंतीभाई प्रभुदास लल्लुभाई (झुंडाल), प.भ.अ.नि. मंगळदास हरगोविंददास पटेल, प.भ. शरदभाई बाबुभाई शाह (अमदावाद), प.भ. कुंवरजीभाई झीणाबाई केराई (नारायणपर-कच्छ), प.भ. नैनेशभाई टी. गांधी (अमदावाद). **भादरवा वद-६** प.भ.अ.नि. मनुभाई प्रभुदासभाई पटेल (कुंडाळ), प.भ.अ.नि. बाबुभाई डाह्याभाई पटेल (काळीगाम), प.भ.अ.नि. कलाबेन रमणलाल पटेल (राणीप), प.भ. योगेश धनजीभाई पटेल (अमदावाद). **भादरवा वद-७** प.भ.अ.नि. बाबुभाई जीवराजभाई (अमदावाद), प.भ. हरेशभाई मफतभाई गदाणी (अमदावाद), प.भ. अशोकभाई हरिभाई कथीरीया (अमदावाद), प.भ. रमेशभाई मारफतीया (जोरणंग), प.भ. सविताबेन ओधवजीभाई भालाणी (अमदावाद), अ.नि. स्वामी लक्ष्मीनारायणदासजी (राजकोट गुरुकुळ), प.भ. लक्ष्मीबेन कुंवरजी राघवाणी (बळदीया-कच्छ), प.भ. देवदासभाई बचुभाई सुहागीया (गांधीनगर). **भादरवा वद-८.** प.भ. अमृतभाई प्रहलादभाई पटेल (बापुनगर), प.भ. वसंतकुमार नटवरभाई पटेल (सोजा), प.भ. मंगळभाई मरघाभाई (झुंडाल), प.भ. जयकृष्ण प्रविणभाई पटेल (अमदावाद). **भादरवा वद-९** प.भ. सोनी प्रविणभाई खुशालदास (अमदावाद), प.भ.अ.नि. छगनभाई जसमतभाई झांझरकीया (अमदावाद), प.भ. पटेल नयनभाई दशरथभाई (अमदावाद), प.भ. पटेल महेशकुमार भुदरभाई (नरोडा), प.भ.अ.नि. रामजीभाई मनजी वरसाणी (नारायणपर-कच्छ), प.भ. अरविंदभाई बचुभाई पटेल (अमदावाद). **भादरवा वद-१०** प.भ.अ.नि. मगनभाई मथुरभाई पटेल (बोदाल), प.भ. नर्मदाबेन जेठालाल पटेल (वडोदरा), प.भ. गोवुभा कानजीभा वाघेला (गोधावी), प.भ. कोशलेन्द्र भरतभाई लवजीभाई पटेल (बायड), प.भ. बाबुलाल शिवलाल ठक्कर (अमदावाद), प.भ. ईन्दुमतीबेन शाह, रमणलाल एन. शाह, प.भ. कीर्तिकुमार जीवणलाल मोदी (अमदावाद), हवेली महिला मंडळ (कालुपुर मंदिर). **भादरवा वद-१२** प.भ.अ.नि. मधुबेन कांतिलाल पटेल (अमदावाद), प.भ.अ.नि. रूक्ष्मणीबेन अंबालाल पटेल (झुलासण), प.भ.अ.नि. रणछोडभाई काशीरामभाई पंड्या (भावनगर), प.भ. कुंदनबा नागदान सोनीवाळा (अमदावाद), प.भ.अ.नि. वर्षाबेन महेन्द्रभाई चोकसी (मोरबी), प.भ.अ.नि. भीमजीभाई मेघजीभाई

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

डोबरीया (अमदावाद), प.भ.अ.नि. शांतिबेन नारणभाई पटेल (देवपुरा), श्री बालस्वरूप श्री घनश्याम महाराज (अमदावाद), प.भ. चौधरी कांताबेन अमृतभाई (मकाखाड), प.भ. विनुभाई पोपटभाई पडशाळा (बापुनगर), प.भ. सारंग जादवजी गोरसीया (बळदीया-कच्छ), प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन शंकरभाई (धनसुरा), प.भ.अ.नि. दिवाळीबेन वल्लभभाई नसीत (अमदावाद), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ). **भादरवा वद-१३** प.भ.अ.नि. दिनेश माणेकलाल भावसार (अमदावाद), प.भ.अ.नि. कनुभाई परीख, प.भ. लीलाबेन कानजीभाई पटेल (जामनगर). **भादरवा वद-१४** प.भ.अ.नि. रामजीभाई नानजीभाई सुहागीया (बापुनगर), प.भ. तेजस पार्थ रमेश राबडीया (सरली-कच्छ), प.भ. नटवरभाई रूपसिंहभाई खत्री (भाभरवाळा), प.भ.अ.नि. शिवजी प्रेमजी भूवा, प.भ. कानजी नारण वेलाणी (सुखपर-कच्छ). **भादरवा वद-३०** प.भ. मेहुल आर. पटेल (वावोल), प.भ. गीरीशभाई चिमनभाई पटेल (अमदावाद), प.भ.अ.नि. विष्णुप्रसाद एम. ठाकर (अमदावाद), प.भ.अ.नि. केशवलाल लखाभाई पटेल (असलाली), प.भ.अ.नि. सावित्रीबेन परीख, प.भ.अ.नि. बाबुभाई सोमाभाई पटेल (अमदावाद), प.भ.अ.नि. उषाबेन परमानंदभाई पटेल (राणीप), प.भ.अ.नि. कैलासबेन हसमुखभाई शाह (अमदावाद), प.भ.अ.नि. हंसाबेन बाबुलाल सोनी (अणदावाद), प.भ. पटेल किरीटभाई बकोरभाई (लवारपुर), प.भ.अ.नि. नटवरभाई भावसार, अ.नि. गीताबेन भावसार (कालुपुर), प.भ. मोक्ष कवलकुमार पटेल (अमदावाद), अ.नि. स.गु. स्वामी श्रीजीप्रसाददासजी (अमदावाद), प.भ.अ.नि. सोनी चुनीलाल (अमदावाद)

आसो सुद-१ प.भ. अनुराधा सिनोय (गांधीनगर), प.भ.अ.नि. जगदीशभाई त्रिभोवनभाई पटेल (कंडारी), प.भ. घनश्याम सी. पटेल (अमदावाद). **आसो सुद-२** प.भ. जसुबेन लालजी भूवा (सुखपर-कच्छ), प.भ. रामजी लालजी वेकरीया (भुज-कच्छ), प.भ. रामुबेन देवसीभाई (दरेड). **आसो सुद-३** प.भ. प्रविणभाई देवजीभाई ठक्कर (अंजार-कच्छ), प.भ.अ.नि. देवजीभाई करशनभाई तेजाणी (सुरत), अ.नि. कोठारी स्वामी योगेश्वरदासजी गुरु शा. स्वा. उत्तमचरणदासजी (पंचाळा). **आसो सुद-४** प.भ. कुवरबेन जेठालाल वेलाणी (सुखपर-कच्छ), परमपूज्य श्री बिन्दुराजा प्रफुलकुमार द्विवेदी (न्युजर्सी). **आसो सुद-५** प.भ. आहान सन्नी पटेल (साबरमती). **आसो सुद-६** प.भ. जमनभाई कानजीभाई मालवीया (अमदावाद). **आसो सुद-७** प.भ. सन्नीभाई जयंतिभाई पटेल (झुंडाल). **आसो सुद-८** प.भ. अशोकभाई जोईताराम पटेल (डांगरवावाळा), प.भ.अ.नि. जीवीबाई वालजी (भक्तिनगर). **आसो सुद-९** प.भ.अ.नि. पार्वतीबेन वालजीभाई धानाणी (सुखपर-कच्छ). **आसो सुद-१०** प.भ. कांतिलाल मावजी खीमाणी (दहींसरा-कच्छ). **आसो सुद-११** प.भ.अ.नि. लालजी मनजी भूडीया (कोडकी-कच्छ), प.भ. अंकितभाई कोमलबेन पटेल (बोस्टन), प.भ. केसरा रामजी भंडेरी (रामपर-कच्छ). **आसो सुद-१२** प.भ.अ.नि. सविताबेन अमृतलाल (जसमतपुरा), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ), प.भ. घनश्यामभाई शांतिलाल का. (हालोल), प.भ. कांताबेन घनश्यामभाई पटेल (राणीप), प.भ. शैलेषभाई भावसार (राधाजी) (सरसपुर), प.भ. डाह्याभाई विरजीभाई (हळवद), प.भ. धनजीभाई रामाभाई सतासीया (नाना मुज्यासर), प.भ. केयाबेन विपुलकुमार पटेल (नेत्रामली), प.भ.अ.नि. सविताबेन लालजीभाई गोहिल (अमदावाद). **आसो सुद-१३/१४** प.भ. दनाभाई पांचाभाई पटेल, प.भ. कनुभाई नारणभाई पटेल (साबरमती), प.भ. अभिजीतभाई सुरेशभाई आंबलीया (जेतपुर). **आसो सुद-१५** प.भ. धनबाई कानजी भूडीया (मानकुवा-कच्छ).

आसो वद-१ प.भ. गोपाल कानजीभाई वेकरीया (सुखपर-कच्छ), प.भ.अ.नि. अरविंदभाई कामदार (भावनगर). **आसो वद-३** प.भ.अ.नि. गंगाबेन अरजणभाई पटेल (वलसाड). **आसो वद-४** श्री जयशंकरबापा (ईन्दौर). **आसो वद-५** प.भ. कंचनबेन गंगारामभाई पटेल (अमदावाद), प.भ.अ.नि. जसुबेन देवराजभाई पोकार (गडानी-कच्छ). **आसो वद-६** प.भ. पटेल नैलेशभाई डाह्याभाई (भावपुरा), प.भ. पटेल सरोजबेन नरेन्द्रभाई (अणदावाद), प.भ. पटेल नीताबेन नाथाभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. लालजीभाई नाथाभाई सावलीया (दातरडी), निलकंठ लेन्ड स्क्रेप एसोसियेट (अमदावाद), प.भ. सविताबेन गोविंदभाई पटेल (अमदावाद), प.भ. जीलुभाई भईजीभाई डाभी (जवारज). **आसो वद-७** प.भ.अ.नि. हरिकृष्ण छनालाल जनशाळी (वडनगर). **आसो वद-८** प.भ.अ.नि. चेहरबेन लवजीभाई चौधरी (बालवा), प.भ.अ.नि. शिवानीबेन पांडे (उत्तराखंड), प.भ. राकेशभाई बिपीनभाई पटेल (उनावा). **आसो वद-९** प.भ. चंद्रेशभाई आर. पटेल (कुहा). **आसो वद-१२** प.भ. रवजीभाई हरजीभाई नकुम (जामखंभाळीया), प.भ. शैलेषभाई भावसार हरिॐ परिवार (अमदावाद), प.भ.अ.नि. केशवलाल मेघजीभाई सांखला (नडीयाद), प.भ. चुडासमा पूर्वजीतसिंह नीतुभा (झिंझर), प.भ. मयंकभाई कामदार (पोरबंदर), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ). **आसो वद-१३** श्री हरिकृष्ण नोवेल्टी श्री शांतिभाई (अमदावाद), प.भ.अ.नि. दमयंतीबेन शिवजीभाई पटेल (नडीयाद). **आसो वद-१४** प.भ.अ.नि. अर्जुनभाई हरिभाई डबासीया (मानकुवा-कच्छ), प.भ. श्वेताबेन बाबुलाल प्रजापति (गांधीनगर).

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

कारतक सुद-१ प.भ.अ.नि. वल्लभभाई मूळजीभाई गाबाणी (खोपाळा), प.भ. कल्पेशभाई नटवरभाई पटेल (अमदावाद), प.भ. राधाबेन मनुभाई पटेल. **कारतक सुद-३** प.भ. वसंतभाई किरीटकुमार पटेल (मोखासण), गं.स्व. कमळाबेन अमृतभाई पटेल (विहार), प.भ. मगनभाई ननुभाई पडसाळा (सुरत), प.भ. कांतिभाई मोहनभाई शिंगाळा (सुरत). **कारतक सुद-५** प.भ.अ.नि. मनुभाई शिवाभाई (अमदावाद), प.भ. उमेश गोपालभाई वेकरीया (बळदीया-कच्छ), प.भ. गोपालभाई कानजीभाई वेकरीया (सुखपर-कच्छ), प.भ. सहज विशाल पटेल (ओस्ट्रेलीया),. **कारतक सुद-६** प.भ. बालाभाई धरमशीभाई पटेल, श्री स्वामिनारायण मंदिर शेखपाट, ह. प.भ. करशनभाई राघवाणी, प.भ. अरूणाबेन (धनसुरा), प.भ.अ.नि. धर्मेशभाई मोहनभाई घोघर (वेळावदर), प.भ.अ.नि. नानजीभाई लालजीभाई काचा (जूनागढ), प.भ. मोदी हसमुखभाई शंकरलाल (महेसाणा). **कारतक सुद-७** प.भ. अवध केतनभाई गोदाणी (अमदावाद), प.भ. मोहनभाई मोतीभाई कळशीया (बोटाद). **कारतक सुद-८** प.भ. संतोकबेन बळदेवभाई चौधरी (माणेकपुर). **कारतक सुद-९** प.भ. जयशील प्रफुलकुमार भावसार (सरसपुर), प.भ.अ.नि. देवजी लालजी पिंडोरीया (सामत्रा-कच्छ), प.भ. विशरामभाई रामजीभाई पाधरा (मदनपुर-कच्छ). **कारतक सुद-१०** प.भ.अ.नि. दिव्यानीबेन प्रफुलभाई सुरेलीया (अमदावाद), प.भ.अ.नि. रंगाईबेन जयरामभाई गढीया (उगामेडी). **कारतक सुद-११** प.भ.अ.नि. दिव्यानीबेन प्रफुलभाई सुरेलीया (अमदावाद). **कारतक सुद-१२** प.भ. महेन्द्रभाई डाह्याभाई पटेल (अमदावाद), प.भ. संगीताबेन पियुषभाई पटेल (अमदावाद), प.भ. बिन्देशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. मधुबेन परसोतमदास पटेल (अमदावाद), प.भ. मित बिपीनभाई पटेल (राणीप), प.भ. रमणभाई द्वारकादास पटेल (महेसाणा), हरिॐ परिवार प.भ. शैलेषभाई भावसार (सरसपुर), प.भ. हरेशभाई मनजीभाई पटेल (महादेवनगर), प.भ. शारदाबेन शंकरलाल पटेल (सज्जनपुरा-माणसा), प.भ. ईन्द्रवदन रावजीभाई पटेल (नारणपुरा), प.भ. हिरूभाई सेंधाभाई पटेल (अमदावाद), प.भ. लालजीभाई सोनी (अमदावाद), प.भ. पटेल निलमबेन (अमदावाद), प.भ. घनश्यामभाई जेरामभाई (सुरत), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ). **कारतक सुद-१३** प.भ. अंकुर नवीनभाई सोनी (अमदावाद), प.भ. हेतलबेन प्रविणकुमार पटेल (अमदावाद), प.भ. सुरेन्द्रभाई वल्लभभाई पटेल (संतरामपुर), प.भ. पटेल पंकजभाई चंदुलाल (वागोसणा), प.भ.अ.नि. देवजी कानजीभाई पटेल (चाचावदरडा), प.भ. अक्षर कौशिककुमार चौधरी (ईश्वरपुरा), प.भ.अ.नि. चंद्रकांत केशवलाल महेता (अमदावाद), प.भ. परेशभाई विष्णुभाई (गांधीनगर). **कारतक सुद-१४** प.भ. हिरजी लधा गोरसीया (सुखपर-कच्छ), प.भ.अ.नि. जयंतिभाई आदरभाई (वावोल), प.भ. जयंतिभाई रावजीभाई पटेल (पोर).

कारतक वद-१ प.भ. मुकेशभाई मनसुखलाल गांधी (अमदावाद). **कारतक वद-२** प.भ. मालतीबेन ठाकोरभाई पटेल (अमदावाद), प.भ. भीखुभाई पोपटभाई सोरठीया (बापुनगर). **कारतक वद-३** प.भ.अ.नि. रमणभाई बी. पटेल (अमदावाद), प.भ. कंसारा भाविन नितीनकुमार (अमदावाद), प.भ. धरमशीभाई गोविंदभाई पटेल (कडी). **कारतक वद-४** प.भ.अ.नि. मंगळभाई जयंतीभाई पटेल (वडोदरा), प.भ. तेजेशभाई मगनभाई पटेल (बोटाद). **कारतक वद-५** प.भ. महेन्द्रभाई बाबुभाई पटेल (अमदावाद), प.भ. आशिषभाई हरेशभाई भट्ट (गांधीनगर), प.भ. चौहाण अश्विनभाई बाबुभाई, स.गु. स्वामी हरिदास गुरु स्वा. धर्मप्रसाददासजी खांभा, प.भ. प्रतिकभाई पटेल (उनावा), प.भ. पटेल तुलसीभाई मोहनभाई (मणीपुर-कडी), प.भ. रमेशभाई काछडीया (निकोल), प.भ. मनसुख कानजी पिंडोरीया (कच्छ), प.भ. शकरीबेन भगत (वडु), प.भ. अर्जुन विशालकुमार पटेल (कलोल), प.भ. ज्योतिबेन कांतिलाल (सोजा), प.भ. पटेल जीतेन्द्रकुमार नानालाल (वडनगर). **कारतक वद-७** प.भ. विनोदराय कानजीभाई रोकड (अमरेली). **कारतक वद-८** प.भ. नायक चंपाबेन आत्माराम (पानसर), प.भ. कोलडीया हार्दिकभाई महेन्द्रभाई (अमदावाद), प.भ. पटेल भगवानभाई शंकरभाई (मणीपुर). **कारतक वद-९** प.भ. सुहानीबेन जयदीपभाई पटेल (अमदावाद), प.भ.अ.नि. रतीलाल सोमनाथदास पटेल (अमदावाद). **कारतक वद-१०** प.भ. सविताबेन चतुरभाई दुधात (अमदावाद). **कारतक वद-११** प.भ. देवसी परबत पिंडोरीया (नारणपर-कच्छ). **कारतक वद-१२** प.भ. हसमुखलाल माणेकलाल (मोखासण), प.भ. रमाबेन छगनभाई पटेल (नारायणपुरा), श्री घनश्याम महाराज (हवेली), प.भ. डाह्याभाई शंभुभाई चौधरी (माणेकपुर), प.भ. हर्षदभाई लालभाई पटेल (शीलज), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ). **कारतक वद-१३** प.भ. चौधरी ढबुबेन बळदेवभाई (बालवा), प.भ. अर्जुनभाई वेजाभाई मेर (धंधुसर-जुनागढ). **कारतक वद-३०** प.भ. भावनाबेन रसिकभाई टांक (अमदावाद), प.भ.अ.नि. चौधरी ढबुबा बळदेवभाई (बालवा), प.भ. कोकीलाबेन बिपीनचंद्र ओझा (अमदावाद).

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

माणसा श्री स्वामिनारायण मंदिर सार्ध शताब्दी महोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते
प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा सभा में आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

कुजाड श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति की प्रतिष्ठा
करते प.पू. महाराजश्री ।

इसंड श्री स्वामिनारायण मंदिर में
मूर्ति प्रतिष्ठा करते प.पू. महाराजश्री ।

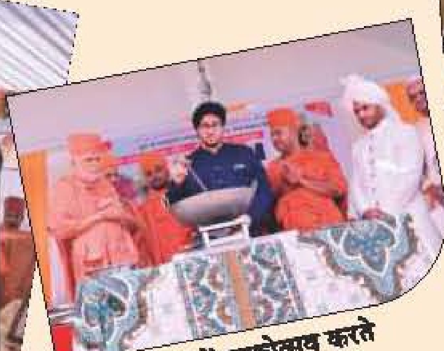

कलोल पंचवटी मंदिर पांचवे पाटोत्सव के अवसर
पर यज्ञ में श्रीफल डालते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

लींबडी मंदिर में शाकोत्सव करते
प.पू. लालजी महाराजश्री ।

बालासिनोर मंदिर में शाकोत्सव करते
प.पू. लालजी महाराजश्री ।

डांगरवा (पाटीदार) मंदिर
२० वे पाटोत्सव के अवसर पर
ठाकोरजी की आरती उतारते
प.पू. लालजी महाराजश्री ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2021-2023
Issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2023

कंपाला श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते प.पू. महाराजश्री ।

नागलपर (कच्छ) श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते प.पू. महाराजश्री ।

मूली "उत्सव" प्रसंग के अवसर पर विजय स्तंभ की स्थापना विधि करते
प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू. श्रीराजा ।

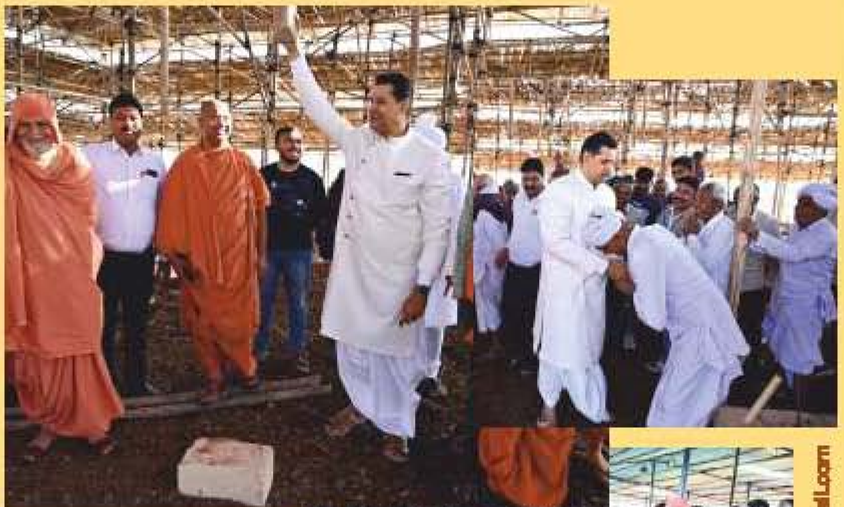

मूली "उत्सव" प्रसंग पर पत्थर उठाकर श्रम यज्ञ प्रारम्भ कराते तथा हरिभक्तों से प्रेमपूर्वक मिलते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

Praful Kharsani@gmail.com